7

जब आपके साथ दुर्व्यवहार हो

(मत्ती 5:38-42)

पहाड़ी उपदेश के हमारे अगले भाग अर्थात मत्ती 5:38-42 में जो कुछ यीशु के श्रोताओं से सुना था और जो उसने बताया, उस में अगले से अन्त तक के अन्तर हैं। यह अन्तर और अन्त वाला अन्तर आपस में काफ़ी जुड़े हुए हैं। क्योंकि दोनों में बताया गया है कि हमें दुर्व्यवहार का जवाब कैसे देना चाहिए।[1] इस पाठ के वचन से पहाड़ी उपदेश किसी भी अन्य बात से अधिक विवाद का कारण बना है:

> तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, बुरे का सामना न करना। परन्तु यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़ (मत्ती 5:38-42)।

डी. मार्टिन लॉयड-जोनस ने लिखा है, ''पवित्र शास्त्र में सम्भवतया ऐसा कोई वचन नहीं है, जिसने इस शिक्षा से जो हमें बुराई का सामना न करने और प्रेम करने वाले और क्षमा करने वाले बनने के लिए कहती है, इतना विवाद और झगड़ा पैदा नहीं हुआ।''[2] मसीहियत के शत्रुओं द्वारा इस वचन का इस्तेमाल यह कहने के लिए किया जाता है कि यीशु की शिक्षाएं मूर्खतापूर्ण और असम्भव हैं। यह वह भाग भी है जो यीशु के पीछे चलने की इच्छा करने वालों को उलझन में डाल देता है। संक्षेप में इसे हमारे जीवनों में कैसे लागू किया जाना चाहिए? कई भावी मसीही या तो इस वचन के निर्देशों को नज़रअन्दाज कर देंगे या इसकी व्याख्या अपने तरीके से करेंगे। मेरी चुनौती इसे बिना खारिज किए इस शिक्षा को व्यावहारिक बनाना है।

मैं इस पाठ को ''जब आपके साथ दुर्व्यवहार हो,'' कहता हूं। दूसरों द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने पर परमेश्वर के बालक को कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए? इस पाठ में हम मुख्यतया उस प्रश्न के यीशु के नकारात्मक उत्तर (क्या *न* करें) को देखेंगे। अगले पाठ में उसके सकारात्मक जवाब (क्या करें) को देखेंगे।

जो उन्हें सिखाया गया था (5:38)

यीशु ने पहले उसकी बात, जो उसके सुनने वालों को सिखाया गया था: ''तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत'' (आयत 38)। पुराने नियम की यह शिक्षा वही है जिससे अधिकतर लोग परिचित थे, वे लोग भी जो बाइबल के बारे में और

कुछ नहीं जानते। ये शब्द पुराने नियम में तीन बार मिलते हैं: निर्गमन 21:22-25; लैव्यव्यवस्था 24:19, 20; और व्यवस्थाविवरण 19:21. व्यवस्थाविवरण 19:21 इस प्रकार है: ''तू बिल्कुल तरस न खाना; प्राण के बदले प्राण का, आंख के बदले आंख का, दांत के बदले दांत का, पांव के बदले पांव का दण्ड देना।''

यह आज्ञा क्यों दी गई

इन शब्दों का इस्तेमाल व्यक्तिगत रंजिश से, परिवार के झगड़ों से और सरकारी अवज्ञा तक के लिए बहाने के रूप में इस्तेमाल किया गया है। क्या परमेश्वर ने यह आज्ञा इसी लिए दी थी? बिल्कुल नहीं। इस निर्देष के सम्बन्ध में कई तथ्यों को समझना आवश्यक है। पहला यह है कि यह आज्ञा बदला लेने को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं दी गई थी, पर *सीमित दण्ड* के लिए (ध्यान से सुनें)। इस आदेश से पहले यदि किसी की आंख चली जाती तो वह उसकी आंख निकालने वाले की दोनों आखें निकालने की कोशिश करता और शायद उसका प्राण भी। व्यक्तिगत बदला लेना आमतौर पर पूरे परिवार या नगर या देश को शामिल कर लेता होगा। जब आप आंख के बदले आंख की आज्ञा को सुनते हैं तो इस पर इस प्रकार विचार करें: ''एक आंख के लिए *केवल* एक आंख, और एक दांत के लिए *केवल* एक दांत *इससे बढ़कर नहीं*।''

दूसरी बात, जो आपको समझनी चाहिए कि ये शब्द आम इस्राएली के लिए नहीं बल्कि अधिकृत न्यायियों के लिए मार्गदर्शक के रूप में देने के इरादे से थे। अभी हम व्यवस्थाविवरण 19:21 से पढ़ रहे हैं। संदर्भ को देखने के लिए उससे कई आयतें पीछे की ओर देखें। आयत 17 दो जनों की बात करती है जिनके बीच में झगड़ा हुआ था। उन्हें ''यहोवा के सम्मुख अर्थात उन दिनों के याजकों और न्यायियों के सामने खड़े होने'' को कहा गया। आयत 18 कहती है कि ''न्यायी भली-भांति पूछताछ करें।'' अगली आयतें न्याय करने के ढंग का बताती हैं। ''आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत'' का निर्देश उन्हीं निर्देशों का भाग है। यह नियम मूल न्यायिक बात है कि दण्ड अपराध के अनुकूल ही है।

हमें नहीं मालूम कि वास्तव में कभी आंख/दांत की आज्ञा का पालन किया गया था या नहीं। यीशु के समय तक घाव पर आमतौर पर एक मौद्रिक कीमत ठहराई जाती थी।[3] (चाहे आंख हो या दांत या और कुछ।) यह राशि दोषी पक्ष द्वारा दी जाती थी (जैसा आज अधिकतर अदालतों में होता है)।

इस आज्ञा का दुरुपयोग कैसे हुआ

इसलिए आंख के बदले आंख का नियम ''छूट के बजाय पाबन्दी थी।''[4] मूसा की व्यवस्था वास्तव में व्यक्तिगत बदला लेने को बढ़ावा नहीं देती थी। हम में से अधिकतर लोग लैव्यव्यवस्था 19:18 के शब्दों से परिचित हैं: ''एक-दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना''; पर इस आयत के पहले भाग पर ध्यान दें: ''पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना।'' तौभी यहूदी लोग आंख और दांत वाले वचन का इस्तेमाल यह कहने के लिए करते थे कि परमेश्वर ने निजी बदला लेने की अनुमति दी है।

आज भी वैसे ही इस आयत का दुरुपयोग होता है। क्रोध से भरी आंखों वाले दूसरों को

हानि पहुंचाने वाले कट्टर लोग काबू में नहीं आते, ''आखिर, बाइबल ही तो कहती है 'आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत'!''

जो यीशु ने सिखाया (5:39-42)

एक नियम (आयत 39क)

यीशु ने पुराने नियम की शिक्षा के दुरुपयोग का जवाब इस प्रकार दिया: ''परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, बुरे[5] का सामना न करना[6]'' (आयत 39क)। आरम्भ से ही हमें विवाद में डाला जाता है: ''बुरे का सामना न करना'' का अर्थ क्या है। बुरे लोगों को जो चाहते हैं करने दो? उन्हें संसार में निरंकुश भागने दो? यह तो सही नहीं लगता? ''हमारा सामना तुरन्त यीशु के शब्दों को कमज़ोर किए बिना उन्हें सही ठहराने के चुनौती भरे काम से होता है।''

शायद पहली बात जो मुझे कहनी चाहिए वह यह है कि यीशु सामान्य अर्थ में समाज से नहीं बल्कि निजी चेलों से बात कर रहा था:

- वह माता-पिता से उनके बच्चों की बात नहीं कर रहा था। बच्चे में बुराई का सामना गम्भीरतापूर्वक किया जाना आवश्यक है। (अनुशासन की आवश्यकता पर, देखें इब्रानियों 12:8, 11.)
- उसके मन में सरकारें भी नहीं थीं। परमेश्वर ने सरकारी अधिकारियों को ''बुरे काम करने वाले को'' दण्ड देने का अधिकार दिया हुआ है (रोमियों 13:4)।
- वह मण्डलियों को निर्देश नहीं दे रहा था। झूठे शिक्षकों को सहन नहीं किया जाना था (देखें मत्ती 7:15)। जो कोई भी झूठी शिक्षा देने वाले को प्रोत्साहित करता है, वह ''उसके बुरे कामों में भागी होता है'' (देखें 2 यूहन्ना 11)। जो कोई भी झूठी शिक्षा देने वाले को प्रोत्साहित करता है वह ''उसके बुरे कामों में भागी होता है'' (देखें मत्ती 18:15-18)। इसके अलावा पाप में लगे रहने वाले सदस्यों को भी कलीसिया के द्वारा सुधारा जाना आवश्यक है।

यदि यीशु माता-पिता को निर्देश नहीं दे रहा था, सरकारी अधिकारियों को निर्देश नहीं दे रहा था, कलीसिया के अगुओं को नहीं समझा रहा था तो फिर वह किससे बात कर रहा था। वह निजी चेलों के रूप में हम से बात कर रहा था। यीशु इस बात से चिन्तित था कि व्यक्तिगत रूप में दुर्व्यवहार किए जाने पर हम कैसे जवाब दें।

अपने मन में ''व्यक्तिगत रूप में'' शब्द को रेखांकित कर लें। यीशु यह नहीं कह रहा था कि हम बुरे व्यक्ति का कानून तोड़ने पर या अपने आपको या दूसरों को हानि पहुंचाने पर सामना न करें। उदाहरण के लिए, यदि कोई आपके बच्चे को हानि पहुंचाने लगे, तो यीशु यह नहीं चाहेगा कि आप चुपचाप बैठे रहें और कुछ न करें। हमें दूसरों के अधिकारों और सिद्धांत के मामलों में बुराई का सामना करना आवश्यक है।

यीशु ने स्वयं बुराई और बुरे लोगों का सामना किया। दो अवसरों पर उसने मन्दिर में से उन लोगों को निकाल दिया जो इसे अशुद्ध कर रहे थे (देखें यूहन्ना 2:13-17; मत्ती 21:12, 13)।

उसने बुरे लोगों के कपट को गलत कहा (मत्ती 23)। प्रेरित पौलुस ने भी बुराई और बुरे लोगों का सामना किया था।[7] एक अवसर पर जब पतरस गलत था तो पौलुस ने ''उसके मुंह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था'' (गलातियों 2:11)। ''सामना किया'' शब्द यहां भी यूनानी शब्द से ही लिया गया है। परन्तु ध्यान दें कि बुराई और बुरे लोगों का सामना सिद्धांत के रूप में किया गया था न कि इसलिए कि यीशु और पौलुस इस बात से परेशान थे कि उन्होंने उनके साथ व्यक्तिगत रूप में दुर्व्यवहार किया।

यीशु के मन में क्या था इसकी शायद सबसे बढ़िया व्याख्या स्वयं उसके द्वारा गाल फेर देने, कुर्ता दे देने और दो कोस चलने के उदाहरण में मिलती है।[8] इन में से कोई भी उदाहरण जान को खतरे वाला नहीं, पर सभी उदाहरण व्यक्तिगत हैं, और सभी उसका जिसे हम अपने अधिकारों के रूप में मानते हैं, उल्लंघन है।

चार उदाहरण (आयतें 39ख-42)

इन उदाहरणों पर विचार करते हुए हम उनके पीछे के नियम को देखेंगे। कुछ लोग यीशु के निर्देशों को केवल नियमावली के रूप में देखते हैं कि मसीही व्यक्ति को कैसे काम करना चाहिए। परन्तु मसीही के रूप में छह दशक के अपने जीवन में मुझे केवल कभी दायें गाल पर थप्पड़ नहीं पड़ा, कभी किसी ने मुझ पर मुकदमा नहीं किया और न मेरा कुर्ता लिया है, न ही कोई मुझे ज़बर्दस्ती एक कोस लेकर गया है। यदि इन आज्ञाओं के पीछे कोई सामान्य नियम न होता तो मेरे प्रतिदिन के जीवन में इनका कोई महत्व नहीं होना था। पी. डब्ल्यू. जोन्सन ने सुझाव दिया है कि यीशु द्वारा दिए गए उदाहरण ''दास की तरह मानने के लिए'' नहीं दिए गए, बल्कि वे उस नियम को बताते हैं जिसे ''सदैव सम्भालना आवश्यक है।''[9]

वह नियम क्या है: (1) दूसरा गाल फेर दे। पहला उदाहरण आयत 39 के अन्तिम भाग में मिलता है: ''परन्तु यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।'' गाल पर थप्पड़ को हमेशा अपमान समझा जाता है।[10] हमारे वचन पाठ वाला थप्पड़ दोहरा अपमान था क्योंकि यह उल्टे हाथ का थप्पड़ था। (यदि दायें हाथ से काम करने वाला व्यक्ति किसी के सामने हो और वह उसे थप्पड़ मारे, और यदि वह अपने हाथ की हथेली से थप्पड़ मारता है तो थप्पड़ उसकी बाईं गाल पर लगेगा। उसकी दाईं गाल पर दायें हाथ से थप्पड़ मारने के लिए उल्टे हाथ से मारना पड़ेगा।) इस बात को समझें कि हम मुंह पर थप्पड़ मारने की बात कर रहे हैं। जोर से मारा गया थप्पड़ पीड़ादायक हो सकता है, पर अधिकतर मामलों में इससे जान को खतरा नहीं होगा।

जब कोई हमें थप्पड़ मारे तो हमें क्या करना चाहिए? यीशु ने कहा, ''... उसकी ओर दूसरा [गाल] भी फेर दे।'' यहां पर आलोचक इस पर बातें बनाने लगते हैं कि मसीहियत में ''वास्तविक संसार'' की कोई अवधारणा नहीं है। उस आदेश को मानने के लिए, ''वे कहते हैं, केवल कायर मूर्ख ही बनेंगे जो दूसरों को उन्हें धक्का देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।'' हमें यह मानना पड़ेगा कि यीशु का निर्देश संसार की फिलास्फी से उलट है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि ''भले मानुष को अपने सम्मान की रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए।'' कालांतर में मुंह पर थप्पड़ आमतौर पर मरने तक लड़ने का निमन्त्रण होता था।

हमें यह भी मानना पड़ेगा कि मसीही लोगों को यीशु की बातें समझ नहीं आईं। क्या वह यह सिखा रहा था कि हम लोगों को अपना अनुचित लाभ लेने दें? सांसारिक पिताओं को समझ नहीं आता कि वे अपने बच्चों को अपनी रक्षा करना कैसे सिखाएं।[11] कुछ मसीही लोग इसे शाब्दिक रूप में लेकर यीशु की शिक्षा को सीमित बना देते हैं। एक आदमी ने कहा, ''अच्छा, मैं दोनों गालों पर उसे मारने दूंगा। पर उसके बाद, तुम उस सबसे बड़ी लड़ाई के गवाह होगे, जो इस देश में होने वाली है!'' इस आदमी को समझ नहीं आया कि यीशु क्या कह रहा है।

मैं बताना चाहता हूं कि मेरा मानना है कि इस और अन्य सभी उदाहरणों के पीछे एक सिद्धांत है। जैसा कि पहले बताया गया है, मुंह पर थप्पड़ का अर्थ *अपमान* होता है। अपमान *व्यक्तिगत* तिरस्कार है। इससे मिलने वाला घाव व्यक्ति के शरीर पर नहीं, उसके सम्मान पर होता है। अपमानित होने की बात सोचने पर क्या होता है? मैं जानता हूं कि मेरे साथ क्या होता है। मेरी रगों में मेरे खून का दौरा तेज़ हो जाता है और मेरे चेहरे का रंग लाल हो जाता है। मुझसे इसके कारण को बाहर निकाल देने का आग्रह किया गया है। वर्षों से मैंने जो कहा और जो किया है, उसे याद करना परेशान करने वाला होगा। मैंने ऐसी प्रतिक्रिया क्यों दी है क्योंकि अपमान *व्यक्तिगत* तिरस्कार है। मैं इस बात से परेशान हो जाता हूं, क्योंकि किसी ने *मेरी* भावना को ठेस पहुंचाई है।

क्या आपने अपमान के मेरे जवाब के विवरण में ''मैं'' और ''मेरे'' शब्द पर और ''व्यक्तिगत'' शब्द पर ध्यान दिया है? मुझे लगता है कि यीशु के उदाहरणों में समाया यह नियम है कि *अपने बारे में इतना मत सोचो*; अपने कथित ''अधिकारों'' की चिन्ता आवश्यकता से अधिक न करो। यही नियम यीशु तब सिखा रहा था, जब उसने कहा कि ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, *तो अपने आप का इनकार करे* और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)।

अपनी मृत्यु से पूर्व की पेशियों में यीशु ने वैसी ही आत्मा को दिखाया जो उसके मन में थी। अन्य दुर्व्यवहारों के साथ-साथ उसके मुंह पर थप्पड़ भी मारे गए (देखें मरकुस 14:65)। एक जगह ऐसे कार्य के नाजायज होने पर मसीह ने विरोध किया (देखें यूहन्ना 18:19-23); परन्तु उसने बदला नहीं लिया, बेशक वह ले सकता था (देखें मत्ती 26:53)। पतरस ने लिखा:

> ... मसीह ... तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। ... वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था (1 पतरस 2:21-23)।

मुझे एक विरोध सुनाई देता है: ''पर यदि मैं दूसरा गाल फेर देता हूं तो लोग मुझे कमज़ोर समझेंगे।'' हो सकता है, पर आपके काम से उन लोगों के मनों को छुआ भी जा सकता है, जो आपका अपमान करते हैं। बहुत पहले मैंने महान प्रचारक मार्शल कीबल की एक कहानी सुनी थी। मन को छू लेने वाले परन्तु साफ़-साफ़ कहे अपने प्रवचनों में से एक के बाद भाई कीबल निमन्त्रण का उत्तर देने वाले लोगों का अभिवादन करने के लिए सभागार के सामने खड़े थे। एक आदमी भागता हुआ नीचे बरामदे में आया। भाई कीबल मुस्कुराते हुए, उस आदमी को सलाम

कहने के लिए आगे होकर हाथ आगे बढ़ाने लगे। उस आदमी ने भाई कीबल को ज़ोर से मुक्का मारा जिससे वह प्रभु भोज की मेज पर जा गिरे। फिर उस आदमी ने उनके मुंह पर थूक दिया। उस आदमी को देखते हुए भाई कीबल ने कहा, ''काश! मैं आपके मन से क्रोध को और आपकी आत्मा से आपको इतनी आसानी से साफ़ कर पाता जितनी आसानी से मैंने अपने चेहरे पर पड़े थूक को साफ़ कर दिया है।'' घटना के विवरण के अनुसार वह आदमी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसका मन सुसमाचार के लिए खुल गया था। बेशक हमारे दूसरा गाल फेरने पर हमेशा ऐसा नहीं होगा पर एक बात सच है कि हमारे साथ दुर्व्यवहार करने वाला प्रभावित हो या न, हम अवश्य प्रभावित हो जाएंगे। यह हमें अच्छे लोग बना देगा।

(2) ''अपना कुर्ता भी दे दो।'' दूसरा उदाहरण अदालत का है:[12] ''यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुर्ता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे'' (आयत 40)। NASB में बीसवीं शताब्दी के लोगों को समझाने के लिए कि यीशु क्या कह रहा था ''शर्ट'' और ''कोट'' शब्दों का इस्तेमाल हुआ है।[13] परन्तु यीशु ने इन संक्षिप्त शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया। ''शर्ट'' का अनुवाद *chiton* से किया गया है, जिसका अर्थ ''भीतरी वस्त्र'' है। यह त्वचा के साथ चिपका बुना हुआ वस्त्र होता था, जो शरीर को गले से लेकर घुटनों तक ढांपता था। कई बार इसे ''चोगा'' कहा जाता है। ''कोट'' के लिए शब्द (*himation*) का अर्थ बाहरी वस्त्र है।[15] बाहरी वस्त्र को जिसे आमतौर पर ''चोगा'' कहा जाता है, रात को कम्बल के रूप में गरीबों द्वारा इस्तेमाल किया जाता था। जब चोगे का इस्तेमाल गहने के रूप में किया जाता था[16] तो इसे रात भर नहीं रखा जा सकता था क्योंकि इससे गरीब आदमी को परेशानी होती थी (देखें निर्गमन 22:26, 27)।

एक पल के लिए कल्पना करें कि आप यहूदी हैं जिस पर आपके भीतरी वस्त्र के लिए मुकदमा किया गया है। आपको निराशा होती है कि आपका विरोधी मुकदमा जीत जाता है तो आपको फिर से अपना वह वस्त्र देना होगा। एक अर्थ में यीशु आपसे कहता है, ''इसकी शिकायत न करो, बल्कि उसे अपना बाहरी वस्त्र भी दे दो।'' आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कितना दुखदायी होगा? परन्तु उदाहरण के विवरण पर ध्यान देना उसके अर्थ से चूक जाना है। यीशु के मन में बिल्कुल वही स्थिति नहीं थी: अधिकतर यहूदी तीन या चार वस्त्र पहनते थे। कुछ ही लोग कमरकसा या कुछ ऐसा पहनते थे (देखें निर्गमन 28:42), पर अधिकतर नहीं पहनते थे। पुरुष आमतौर पर, कुर्ता पहनता था और उसके ऊपर चोगा होता था। यह परिधान कमर के गिर्द बुनी हुई बैल्ट (कमरकस) बांधने से पूरा होता था। यदि हम यीशु के निर्देशों को अक्षरश: लें तो हमें अपने भीतरी वस्त्र और बाहरी वस्त्र उस व्यक्ति को देने वाला आदमी मिलेगा जिसने उस पर मुकदमा किया और फिर अदालत से[17] अपनी कमर पर केवल बैल्ट पहने और शायद कमरकस पहने निकलेगा। यीशु यह प्रस्ताव *नहीं* दे रहा था।[18]

तो फिर वह किसका *प्रस्ताव दे रहा था*? ध्यान देने वाला नियम वही है जो पिछले उदाहरण में था कि अपने व्यक्तिगत *अधिकारों* पर ज़ोर न दो। इस मामले में *कानूनी* अधिकार का इस्तेमाल ही मुद्दा है। परिस्थिति अलग है पर पौलुस ने भाइयों के बीच मुकदमों को बढ़ावा न देने के लिए ऐसी ही बात कही: ''परन्तु सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह है, कि आपस में मुकद्दमा करते हो; वरन अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते'' (1 कुरिन्थियों 6:7)। जहां मैं रहता

हूं वहां लगभग हर बहाने मोटी रकम के लिए लोगों द्वारा बेतुके मुकदमों से अदालतें भरी रहती हैं। सरसी, आरकैंसा में रहते समय मुझे सरकारी मामलों में बार-बार न्याय करने के लिए बुलाया जाता था। हर बार वादी को यह पता चलने पर[19] कि ओछे मुकदमों के लिए मेरा क्या विचार है, मुझे डिसमिस कर दिया जाता था।

मैं यह नहीं कह रहा कि ऐसा कोई अवसर नहीं होता जब हमें अपने कानूनी अधिकारों पर ज़ोर देना चाहिए। रोमी नागरिक के रूप में पौलुस ने कई बार अपने कानूनी अधिकारों का इस्तेमाल किया (देखें प्रेरितों 16:35-39; 22:24-29)। यरूशलेम भेजे जाने से बचने के लिए जहां मृत्यु उसकी राह देख रही थी, उसने कैसर के सामने अपील की (देखें प्रेरितों 25:9-12)। रोमी नागरिक के रूप में यह उसका अधिकार था। मसीह के कार्य या हमारे परिवारों की भलाई से जुड़ी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं; ऐसे मामलों में अपने कानूनी अधिकारों पर ज़ोर देना आवश्यक हो सकता है। परन्तु ध्यान रखें कि हम स्वार्थ या लोभ से प्रेरित नहीं हैं। अदालत में ऐसा कुछ करने के बजाय मसीह पर जिससे हम प्रेम करते हैं, नकारात्मक प्रभाव पड़ने से अच्छा है कि हम दुख सह लें।

(3) ''दूसरा कोस चले जाओ।'' यीशु का तीसरा उदाहरण इस प्रकार है: ''जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा'' (आयत 41)। पहले दो उदाहरणों में आधुनिक प्रतिरूप हैं, पर इस उदाहरण की हम में से कइयों को व्याख्या की आवश्यकता है। अनुवादित शब्द ''बेगार'' (*angareuo*) का अर्थ ''सेवा में लगाना'' है।[20] फारसियों ने अपने शाही हरकारों की सहायता के लिए नागरिकों की आवश्यकता होने की प्रथा चलाई। रोमियों ने इस प्रथा को लेकर विस्तार दे दिया। फलस्तीन में रोमी सिपाही अपनी सहायता के लिए यहूदी लोगों से कानूनी तौर पर ज़बर्दस्ती काम करवा सकते थे। यही शब्द बाद में मत्ती में मिलता है: ''बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे *बेगार में पकड़ा* कि उसका क्रूस उठा ले चले'' (27:32)। हमारे वचन पाठ के सम्बन्ध में, रोमी सिपाही किसी यहूदी को अपना सामान ले जाने के लिए ''एक कोस'' ले जा सकता था। यह रोमी कोस था जो एक हज़ार कदम या लगभग एक हज़ार गज़ होता था। (अमेरिका में कोस 1760 गज़ होता है जो 1600 मीटर से थोड़ा अधिक है।)

अपने आपको यहूदी किसान के रूप में मानें। तीखी धूप वाला दिन है पर पश्चिम में बादल इकट्ठा होने लगे हैं। आप मौसम के बदलने से पहले अपनी फसल लेने के लिए कठिन परिश्रम कर रहे हैं। आप अपनी भौंहे साफ़ करने के लिए रुकते हैं और सड़क पर आपको एक रोमी सिपाही आते हुए दिखाई देता है। उसे यानी इस विश्वासी को जो परमेश्वर के देश पर कब्जा किए हुए है और पवित्र भूमि पर कदम ताल कर रहा है, दुख होता है। सिपाही निकट आकर कई गांठों को ज़मीन पर फैंक देता है और भौंकता है, ''उठाओ इन्हें!'' आप अपना सामान नीचे रखकर जाते हैं और उसका सामान उठा लेते हैं। भारी बोझ से पसीने से तर आप सिपाही के पीछे उसके साथ-साथ घिसटते हुए चलते हैं। आपको कैसा लगता है? गुस्सा? बदला लेने को मन करता है? अन्त में आप जहां जाना था, वहां पहुंचकर सामान नीचे रख देते हैं। अपने खेत वापस जाते हुए आप पूरा रास्ता अपने आप से बुड़बुड़ाते हैं। आपको कुछ ऐसा करना पड़ा जिससे आपको घृणा आती हो; हो सकता है कि तूफ़ान के आने से पहले आपकी फसल खराब

हो जाए। सबसे बढ़कर आप एक अन्यजाति और उसके सामान के निकट सम्पर्क में आने से औपचारिक रूप में अशुद्ध हो गए हैं!

पृष्ठभूमि यही है, और फिर यीशु कहता है, ''उसके साथ दो कोस चला जा''! वास्तव में कुछ हस्तलिपियों में संकेत है कि उसने कहा ''[उसके साथ] *दो कोस* [और जा]।''[22] क्या यीशु अपने चेलों के लिए कठिन काम करने को कहकर केवल उनकी परीक्षा कर रहा है? क्या वह सहने के लिए दो कोस या दूसरा और तीसरा कोस ही था? क्या उन्हें मन में बढ़ते रहने वाले क्रोध के साथ चलना था? नहीं। यीशु अपने चेलों में ऐसा *व्यवहार* डालने की कोशिश कर रहा था जो उससे बढ़कर करने को तैयार है, जो उससे कहा जाता है। इसके अलावा मेरा मानना है कि इसका अर्थ यह है कि दूसरा कोस न केवल स्वेच्छा से बल्कि आनन्द से भी होना चाहिए।[23] आज हम ''दूसरा कोस जाने'' की बात करते हैं। हमारे कहने का अर्थ होता है कि उसने उससे कहीं अधिक किया, जिसकी उम्मीद थी। हमारे कहने का अर्थ यह भी होता है कि उसने सकारात्मक व्यवहार के साथ किया। ताकि भलाई ही निकले।

कई प्रासंगिकताएं ध्यान में आती हैं। हमें अपने विवाह और अपने घरों में ''दो कोस'' जाने की आवश्यकता है। उन माता-पिता के बारे में क्या सोचेंगे, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए केवल आवश्यकता की चीज़ें यानी खाना, कपड़ा और सोने के लिए स्थान ही दिया, जबकि वे इससे कहीं अधिक कर सकते थे? आपका तो पता नहीं, पर मेरे माता-पिता एक-दो कोस चले थे, और तीन और चार और पांच और इससे भी आगे चले थे। इसी प्रकार हमें कलीसिया में ''दो कोस जाना'' आवश्यक है। कई मसीही लोग जानना चाहते हैं कि वे स्वर्ग में जाने के लिए कम से कम कितना चलें। और भी हैं (इनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद) जो प्रभु के लिए अपनी सेवा में ''दो कोस जाने वाले'' हैं। इसे हम स्कूल के कमरे में और काम के स्थान में लागू कर सकते हैं। ऐसे छात्र या कर्मचारी हैं, जो वह करते हैं जो उनसे करने को कहा जाता है, बल्कि उससे भी बढ़कर काम करते हैं। फिर ऐसे लोग हैं, जिन्हें जितना कहा जाए उससे कहीं आगे जाते हैं (देखें कुलुस्सियों 3:23)। नागरिकों और कार्य के अन्य क्षेत्रों में एक ही नियम लागू होता है।

फिर, ध्यान देने वाला नियम यह है कि हमें केवल अपने और अपने अधिकारों के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए। हमें अपने से पहले दूसरों को रखना चाहिए यदि हम ऐसा करते हैं तो उन पर हमारा सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यहूदी किसान वाले मेरे उदाहरण पर वापस आते हैं। निम्न शृंखला की कल्पना करें। सिपाही अन्ततः आप से कहता है, ''तुम ने मेरा सामान काफ़ी उठा लिया। अब तुम घर जा सकते हो।'' फिर सामान को ज़मीन पर फैंकने और छोड़कर जाने के बजाय आप मुस्कुराकर कहते हैं, ''कोई बात नहीं। मैं नगर के फाटक तक खुशी से ले जाऊंगा।'' कुछ और नहीं तो ऐसा काम सिपाही को हक्का-बक्का कर देगा। क्या उस परमेश्वर के बारे में जिसकी तुम आराधना करते हो पूछेगा, हो सकता है नहीं भी? इससे आप अच्छे व्यक्ति बन जाएंगे।

(4) ''दूसरों की सहायता करने में निस्वार्थ बनें।'' पहली नज़र में यीशु का चौथा उदाहरण दूसरों से मेल खाता नहीं लगता। पहले तीन उदाहरण बदला न लेने के विषय पर केन्द्रित हैं: मुंह पर थप्पड़ पड़ने पर, मुकदमा किए जाने पर या एक कोस बेगार में ले जाए जाने पर बदला न लेना। परन्तु फिर यीशु ने दूसरों को देने पर निर्देश दिए: ''जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो

तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़'' (आयत 42)।[24]

एक बार फिर हमें वह आज्ञा मिलती है, जिसका इस्तेमाल मसीहियत का मज़ाक उड़ाने के लिए किया जाता है और जो कुछ मसीही लोगों के लिए उलझाने वाली है। बिना योग्यता के लिए जाने पर इसका अर्थ होगा कि जो भी मांगें या जिस भी चीज़ को मांगें आपको उसकी इच्छा को पूरा करना आवश्यक है।

- आपका बच्चा आपसे ट्रीट मांगता है–और आपको उसे देनी पड़ेगी।
- कोई आपके घर के पास से गुज़रता है और उसे आपका घर बहुत भाता है। वह आपसे आपका घर मांग लेता है–तो आपको उसे देना ही पड़ेगा।
- कोई आदमी आपकी पत्नी पर मोहित होता है और वह उसे मांग लेता है–और आप को उसे उसको देना पड़ेगा।

ये उदाहरण उन हास्यास्पद चरमों को दिखाते हैं कि यह आज्ञा कहां तक मानी जा सकती है। स्पष्टतया यीशु के शब्दों को कुछ इस तरह से मानना आवश्यक है।

यदि प्रमाण की आवश्यकता हो कि उनके साथ न्याय किए बिना यीशु के शब्द मान्य होंगे, तो अगली बात पर ध्यान दें। पहाड़ी उपदेश के थोड़ी देर बाद यीशु ने प्रार्थना के विषय में ये शब्द कहे: ''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे''; ''क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है ...'' (मत्ती 7:7क, 8)। एक और अवसर पर उसने कहा, ''यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा'' (यूहन्ना 14:14)। क्या इन प्रतिज्ञाओं का अर्थ यह है कि परमेश्वर हर मांग को पूरा कर लेता है चाहे प्रार्थना करने वाला कोई भी हो या वह कुछ भी मांग रहा हो? पौलुस ने तीन बार प्रभु से मांगा कि उसके शरीर में का कांटा निकल जाए, पर प्रभु ने उसकी विनती को स्वीकार नहीं किया (2 कुरिन्थियों 12:7–9)। याकूब ने किसी को बताया, ''तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिए कि बुरी इच्छा से मांगते हो'' (याकूब 4:3क)। यदि जो हम मांगते हैं उसे देने की प्रभु की प्रतिज्ञा में शर्त हो सकती है तो दूसरों को देने के हमें उसके निर्देशों में भी शर्त हो सकती है।

शर्तें विभिन्न प्रकार से व्यक्त की जा सकती हैं। हम ध्यान दे सकते हैं कि यीशु ने किसी के मांगने पर *हर चीज़* देने के लिए नहीं कहा।[25] किसी के कुछ भी मांगने पर उसे दे देना उसके लिए विनाशकारी हो सकता है। न ही यीशु ने यह कहा कि हम दूसरों को *वही* देने जो वे चाहते हैं। कोई व्यक्ति पैसे मांग रहा हो सकता है जबकि उसकी वास्तविक आवश्यकता खाना या नौकरी हो।[26]

इन शर्तों की डी. ई. कार्सन की समीक्षा का ढंग मुझे अच्छा लगता है। उसने कहा कि ''विश्वासी के जवाब की एकमात्र सीमा ... वही है, जो प्रेम और पवित्र शास्त्र लागू करता है।''[27] प्रेम हमारे देने पर कौन सी सीमाएं लगा सकता है? प्रेम कहता है कि मैं किसी को ऐसा कुछ न दूं जिससे उसको हानि या दुख पहुंच सकता हो। (यह हमें अपने बच्चों द्वारा किसी भी समय ट्रीट मांगने से निपटने के लिए है।)

और वचन क्या सीमाएं लगाते हैं? बाइबल की व्याख्या का एक मूल नियम ध्यान में रखें: ''किसी अस्पष्ट वचन की व्याख्या ऐसे न करें कि यह किसी और जगह स्पष्ट वचन का

विरोधाभास हो।'' कहीं और स्पष्ट वचन दूसरों को देने पर कुछ सीमाएं लगाते हैं। उदाहरण के लिए हमें ध्यान रखना आवश्यक है कि दूसरे को हमारा देना उसे सुस्त बनाने के लिए न हो।[28] ''... यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:10)। फिर अपनों की देखभाल करने का नियम हमारे अपने परिवार की आवश्यकताओं को देने की भूमिका बनाता है। ''पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है'' (1 तीमुथियुस 5:8)।

आयत 42 का अर्थ क्या नहीं है, इतना ही काफ़ी है। यह उदाहरण पिछले उदाहरणों से कैसे मेल खाता है? फिर से नियम यही है कि हम स्वार्थी न बनें। हमें अपने सामान से इतना लगाव नहीं होना चाहिए कि हम उसे छोड़ न सकें।[29] हमें ज़रूरतमंदों को देने के लिए तैयार होना आवश्यक है।

इस संदर्भ में यीशु यह बता रहा था कि हम उनके साथ कैसे व्यवहार करें, जो हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं। हम उनके साथ क्या करें? हम उन्हें वह दें जिसकी उन्हें आवश्यकता है। यह उदाहरण नकारात्मक से सकारात्मक की ओर जाता है। हम केवल बिना बदला लिए दुर्व्यवहार को सहना ही नहीं, बल्कि अपने दमनकारियों की सहायता करने का तरीका भी ढूंढ़ना है (देखें रोमियों 12:19-21)। अपने साथ दुर्व्यवहार करने वालों के साथ हमारे सकारात्मक व्यवहार करने पर विस्तार से चर्चा अगले पाठ में करेंगे।

परन्तु हमें मत्ती 5:42 की प्रासंगिकता को केवल अपने शत्रुओं तक सीमित नहीं रखना चाहिए। एक सामान्य प्रासंगिकता यहां यह है कि इस बात की चिन्ता करने के बजाय कि मेरा क्या है, मुझे इसे दूसरों के साथ बांटने को तैयार रहना चाहिए। बन्द मुट्ठी और कंजूस होने के बजाय मुझे खुले दिलवाला और उदार होना आवश्यक है। यूहन्ना ने कहा, ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)। पौलुस ने लिखा, ''इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (गलातियों 6:10)। हमारा एक ''महायाजक'' है, जो हमारे साथ सहानुभूति रखता है (इब्रानियों 4:15); इस कारण हमें भी दूसरों के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए।

सारांश

अपने साथ दुर्व्यवहार होने पर हमें क्या करना चाहिए? हमारे पास कम से कम तीन सम्भावित उत्तर हैं:[30]

- *असीमित बदला।* यह जंगल का कानून यानी संसार का तरीका है।
- *सीमित बदला।* यह न्याय की व्यवस्था, यानी मूसा की व्यवस्था का प्रस्ताव है।
- *असीमित भलाई।* यह प्रेम की व्यवस्था यानी मसीह का तरीका है।

तीसरे उत्तर का परिचय इस पाठ में दिया गया था और उस पर विस्तार से चर्चा अगले पाठ में की जाएगी।

इस प्रस्तुति में हम ने यह समझने की कोशिश की है कि मत्ती 5:38-42 में यीशु ने वास्तव

में क्या बताया, पर इन आयतों को मानने के बजाय समझना दस गुणा आसान है। शायद आपको भी वैसा ही लगता है जैसा मुझे कि जितना मैं मत्ती 5 में आगे जाता हूं, उतना ही मसीह की शर्तें कठिन हो जाती हैं और मुझे परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता महसूस होने लगती है। यदि आप यीशु में विश्वास रखते हैं पर आपने वचन के अनुसार बपतिस्मा नहीं लिया है, तो आपको तुरन्त बपतिस्मा ले लेना चाहिए ताकि मज़बूती देने के लिए आपको परमेश्वर का आत्मा मिल सके (प्रेरितों 2:38; देखें रोमियों 8:13, 26)। यदि आप पहले से मसीही हैं तो उस पर भरोसा रखना सीखें, जो आपको कभी छोड़ेगा या त्यागेगा नहीं (इब्रानियों 13:5ख, 6)।

टिप्पणियां

[1]मैदानी उपदेश में ऐसा ही एक भाग है: लूका 6:27-36 आपको उस भाग की तुलना मत्ती 5:38-48 से करनी चाहिए। समानताओं और भिन्नताओं पर ध्यान दें। [2]डी. मार्टिन लॉयड-जोनस, *स्टडीज़ इन द सरमन ऑन द माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 273. [3]ऐसे विकल्प के पुराने नियम के एक उदाहरण में, देखें निर्गमन 21:26, 27. [4]डेविड हिल, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 127. [5]यूनानी भाषा में बिना संज्ञा के (वही स्थिति हमें मत्ती 5 की आयत 39 में मिली थी) केवल विशेषण ''बुराई'' (*poneros*) है। इस कारण KJV में बुराई का सामना न करना है। परन्तु हमें सामान्य अर्थ में बुराई का सामना करने की आवश्यकता है। इसके अलावा ''दुष्ट'' (शैतान की बात) यहां काम नहीं करता (देखे याकूब 4:7)। सदंर्भ में, ''बुरा व्यक्ति'' जो थप्पड़ मारे, मुकदमा करे और चेले को मजबूर करे, यीशु के मन में था। [6]''सामना'' एक मिश्रित यूनानी शब्द *anthistemi* से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ ''विरोध में ठहरना'' है (*histemi* [''खड़े होना''] जो *anti* [''विरुद्ध''] के पहले आता है) (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, विलियम व्हाइट, *जूनि., वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 528)। [7]प्रेरितों 16:35-39; 23:3; 25:9, 10 देखें। हर मामले में पौलुस एक सिद्धांत के लिए खड़ा था, न कि केवल व्यक्तिगत दुर्व्यवहार के कारण विरोध करने के लिए। [8]पाठ में आगे हम चौथे उदाहरण (मांगने वालों को देना) पर विचार करेंगे और यह तय करेंगे कि यह किसी प्रकार पहले तीन उदाहरणों से मेल खाता है या नहीं। [9]बी. डब्ल्यू. जॉनसन, *पीपल'स न्यू टैस्टामेंट* (सेंट. लुइस: क्रिश्चियंस पब्लिशिंग कं., 1891) (http://www.ccel.org/ccel/johnson_bw/pnt.pnt0105.html; इंटरनेट; 30 अप्रैल 2008 को देखा गया)। [10]दो जगह जहां गाल पर थप्पड़ मारने का उल्लेख है 1 राजाओं 22:24 और विलापगीत 3:30 है। 2 कुरिन्थियों 11:20 में मुंह पर मारने की बात भी है।

[11]इस विषय पर लम्बी चर्चा करने के लिए यह सही स्थान नहीं है पर विचार के लिए कुछ बात है कि यदि आप अपने बच्चे को मुक्के से झगड़े को निपटाना सिखाते हैं, तो बड़ा होकर वह क्या करेगा? [12]मत्ती 5 और कचहरी के और उदाहरणों के लिए देखें आयतें 22 और 25. [13]''कोट'' और ''चोगा'' शब्दों का इस्तेमाल करके KJV ने अपने पाठकों का इस्तेमाल किया। [14]वाइन, 105. [15]वही। [16]इस संदर्भ में, ''शपथ'' कर्ज़ की अदायगी के लिए जमाने के रूप में दी गई कोई चीज़ है (*दि अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. [2001], एस. वी. ''pledge'')। [17]कई लोग ''तुम पर मुकदमा करना *चाहता*'' शब्दों का अर्थ कचहरी से पहले किए गए सभी काम को मानते हैं। परन्तु इस वचन का अर्थ यह लेना अधिक स्वाभाविक लगता है कि जब मुकदमे का जीतने वाला एक वस्त्र ले लेता है तो मुकदमे का हारने वाला दूसरा वस्त्र भी उसे दे देता है। [18]पूरी बाइबल में ''नंगेज़'' (अपर्याप्त कपड़े) को शर्म से जोड़ा गया है (देखें यशायसह 47:3; प्रकाशितवाक्य 3:18)। [19]मुद्दई वह होता है जो किसी के विरुद्ध वादी (मुकदमा करता, जिसे प्रतिवादी कहते हैं) है। [20]वाइन, 117.

[21]कोस की जगह अंग्रेजी में ''mile'' लिया गया है जिसका अर्थ ''हज़ार'' है। [22]डी. ए. कारसन, ''मैथ्यू,'' *दि एक्सपोजिटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग

हाउस, 1984), 156. [23]देने के हमारे ढंग से यानी स्वेच्छा से और आनन्द से देने में अन्तर किया जा सकता है (देखें 2 कुरिन्थियों 9:7)। [24]कइयों का मानना है कि आयत 42 में दो अलग-अलग आज्ञाएं हैं, परन्तु यहां वे एक ही आज्ञा की दो अभिव्यक्तियों के रूप में ली गई हैं। [25]लॉयड-जोन्स, 167. [26]एक और अवसर पर किसी ने यीशु से उसकी विरासत पाने की बात कही। यीशु ने उसकी बात नहीं मानी, उसने उसकी हैसियत से कहा, इसके बजाय उसने उस आदमी को वह दिया जिसकी उसे वास्तव में आवश्यकता थी: लोभ के खतरों पर शिक्षा। (देखें लूका 12:13-21.) [27]कारसन, 157. यह बात कहते हुए कारसन के मन में यीशु के चारों उदाहरण हैं। [28]परन्तु यह पुरानी कहावत ध्यान में रखें: ''दस लोगों की सहायता करना जो सहायता के हकदार न हों उसकी सहायता न कर पाने से बेहतर है जिसे आवश्यकता हो।'' [29]किसी ने कहा है कि अपनी सम्पत्ति को ढीले हाथ से पकड़ो। [30]लॉयड जोन्स 171-74 से लिया गया।